

पृथ्वी दविस वशेष: पृथ्वी की चति अब नहीं तो कभी नहीं

संदर्भ

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी वशिवभर में 22 अप्रैल को पर्यावरण चेतना जागरूक करने के लिये **पृथ्वी दविस** मनाया गया। लेकिन अब ऐसा लगता है कयिह महज औपचारिकता से ज़यादा कुछ नहीं है। पृथ्वी के पर्यावरण के बारे में लोगों को जागरूक और प्रेरित करने के लिये पृथ्वी दविस मनाया जाता है। ग्लोबल वार्मिंग के रूप में जो परदृश्य आज हमारे सामने है, ऐसा लगातार बना रहा तो एक दिन ऐसा आगा जब पृथ्वी से जीव-जंतुओं व वनस्पतिका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

क्यों मनाया जाता है पृथ्वी दविस?

- पृथ्वी एक बहुत व्यापक शब्द है जिसमें जल, हरयिली, वन्य-प्राणी, प्रदूषण और इससे जुड़े अन्य कारक शामिल हैं। पृथ्वी को बचाने का आशय है इसकी रक्षा के लिये पहल करना।

लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से पूरे वशिव में 22 अप्रैल, 1970 को पहली बार पृथ्वी दविस का आयोजन किया गया था। इसमें कोई दो राय नहीं कनिती सामने आ रही वभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिये पर्यावरण संरक्षण पर जोर देने की आवश्यकता है।

बढ़ती जनसंख्या का दबाव

वर्तमान समय में पृथ्वी के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती बढ़ती जनसंख्या है। पृथ्वी की कुल आबादी आज साढ़े सात अरब से अधिक हो चुकी है। यह प्रकृतिका सदिधांत है की आबादी का वसिफोट उपलब्ध संसाधनों पर नकारात्मक दबाव डालता है, जिससे पृथ्वी की नैसर्गिकता प्रभावित होती है। बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ताके लिये पृथ्वी के दोहन (शोषण) की सीमा आज चरम पर पहुँच चुकी है। जलवायु परिवर्तन के खतरे को कम-से-कम करना दूसरी सबसे बड़ी चुनौती है। वशिव में बढ़ती जनसंख्या तथा औद्योगीकरण एवं शहरीकरण में तेज़ी से वृद्धिके साथ-साथ ठोस अपशिष्ट पदार्थों द्वारा उत्पन्न **पर्यावरण प्रदूषण** की समस्या विकराल होती जा रही है।

एन्थ्रोपोसीन युग में हुई है सर्वाधिक क्षति

अब यह स्पष्ट हो चुका है की **एन्थ्रोपोसीन (Anthropocene)** युग में पर्यावरण को सर्वाधिक क्षति पहुँची है। आज दुनिया अपनी निर्धारित सीमाओं के भीतर रहने की क्षमता तेज़ी से खोती जा रही है। स्वास्थ्य से जुड़े स्थानीय संकट की खबरें भी अब लगातार सामने आती रहती हैं। ऐसा पर्यावरण के हमारे कुप्रबंधन और जलवायु परिवर्तन के असर के वैश्विक अस्तित्ववादी संकट के कारण हो रहा है।

हम सभी हालात बदलना चाहते हैं। पर्यावरण की साफ-सफाई और संरक्षण में योगदान देना चाहते हैं। हम जिस हवा में साँस लेते हैं वह इतनी दूषित हो चुकी है की प्रतविरष लाखों लोग इसकी वज़ह से काल के गाल में समा जाते हैं। हमारी नदियाँ कूड़े-कचरे और गंदे पानी से खत्म हो रही हैं। हमारे वनों पर भी खतरा मंडरा रहा है। हम जानते हैं की अपना पर्यावरण बचाने के लिये काफी कुछ करना होगा, अन्यथा पृथ्वी का अस्तित्व ही दाँव पर लगा रहेगा। हम सभी इन बेहद महत्त्वपूर्ण बदलावों का हसिसा बनना चाहते हैं।

मनुष्य ही ज़मिमेदार है

- पृथ्वी हमारे अस्तित्व का आधार है, जीवन का केंद्र है। यह आज जिस स्थिति में पहुँच गई है, उसे वहाँ पहुँचाने के लिये मनुष्य ही ज़मिमेदार है। आज सबसे बड़ी समस्या मानव का बढ़ता उपभोग है, लेकिन पृथ्वी केवल उपभोग की वस्तु नहीं है। वह मानव जीवन के साथ-साथ असंख्य वनस्पतियों-जीव-जंतुओं की आश्रयस्थली भी है।

हम इन सब के बारे में अच्छी तरह से जानते हैं, लेकिन सवाल यह है ककिया क्या जा सकता है? क्या कुछ ऐसा है जो हम मनुष्य, स्कूल, कॉलेज, कॉलोनी एवं समाज के तौर पर सामूहिक रूप से कर सकते हैं? हम कैसे अपना योगदान दे सकते हैं?

इसमें मुश्किल कुछ भी नहीं और हम सभी बड़ी आसानी से ऐसा कर सकते हैं। महात्मा गांधी का एक प्रसिद्ध कथन है... “हम दुनिया में जो भी बदलाव लाना चाहते हैं, उसे पहले हमें खुद पर लागू करना चाहिये।” हमें आज यही करने की ज़रूरत है। हम मनुष्यों की जीवनशैली ने पर्यावरण को लगभग बर्बाद कर दिया है। हमारी गतिविधियों और उन्हें कार्यात्मक देने के तरीकों का अंतर बेहद महत्वपूर्ण होता है। इसीलिये बदलाव की दशा में सबसे पहला कदम यह होना चाहिये कि हम अपने कार्यों के प्रति सचेत और जागरूक हों। हमें बदलावों को आत्मसात करना होगा।

हरति स्कूल कार्यक्रम

पर्यावरण संरक्षण के लिये काम करने वाली अग्रणी भारतीय संस्था सेंटर फॉर साइंस एंड एन्वायरनमेंट (CSE) ने एक **हरति स्कूल कार्यक्रम** तैयार किया है, जिसमें स्कूल पर्यावरणीय बदलावों पर भाषण नहीं देते, बल्कि उनका पालन करते हैं। इस कार्यक्रम में छात्र और शिक्षक मिलकर अपने स्कूल का **पर्यावरणीय बैचमार्क** तय करते हैं। जैसे- वे कतिना पानी, बजिली या वाहन इस्तेमाल करते हैं और कतिना कचरा एवं प्रदूषण पैदा होता है? उस फुटप्रिंट के आधार पर वे अपने पर्यावरण की बेहतरी के लिये कदम उठाते हैं।

इस ब्रह्मांड की चेतना है मनुष्य

पृथ्वी दविस के अवसर पर हम सभी को पृथ्वी के प्रहरी बनकर उसे बचाने और आवश्यकतानुसार उपभोग का संकल्प लेना होगा, तभी हम उसकी लंबी आयु की कामना कर सकते हैं। मनुष्य इस ब्रह्मांड का मस्तक यानी चेतना है। लेकिन हैरानी की बात यह है कि इसके बावजूद हमारी पर्यावरणीय ज़िम्मेदारी स्पष्ट नहीं है। मनुष्य ने न केवल जलवायु चक्रों को बदल दिया है, बल्कि ब्रह्मांड के जीवित स्वरूप को नष्ट कर इसकी जैविक लय को अवरुद्ध कर दिया है। ब्रह्मांड में और किसी अन्य जीव के पास मनुष्य जैसे विशेषाधिकार नहीं है तथा सरिफ मनुष्य ही पृथ्वी को जीवंत रखने में सबसे प्रभावी योगदान कर सकते हैं।

इस वर्ष की थीम ‘प्रजातियों को संरक्षित करें’

हमने डायनासोर, बड़े दांत वाले हाथी, गदिध जैसी प्रजातियों के बारे में कतिबों में ही पढ़ा है, उन्हें कभी देखा नहीं। इस बात को लेकर विशेषज्ञ चिंति हैं कि प्रकृति में हो रहे बदलाव के चलते मनुष्य की आने वाली पीढ़ियों तेज़ी से विलुप्त के कगार पर खड़ी कई प्रजातियों के बारे में कतिबों में पढ़कर न जाने। इसी को ध्यान में रखते हुए इस बार विश्व पृथ्वी दविस की थीम **प्रजातियों को संरक्षित करें** रखी गई। आज दुनियाभर में हज़ारों कस्मि के पक्षी, स्तनधारी और कीट-पतंगे या तो विलुप्त हो चुके हैं या फरि विलुप्त होने की कगार पर हैं।

कीट-पतंगे संकट में

वैज्ञानिकों का मानना है कि **छठे विशाल तरीके** (Sixth Extinction or Anthropocene Extinction) से प्रजातियों के लुप्त होने की प्रक्रिया शुरु हो चुकी है। हाल ही में आई एक रिपोर्ट के अनुसार, मधुमकखियों, चींटियों, गुबरैले (बीटल), मकड़ी, जुगनू जैसे कीट जो हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं, अन्य स्तनधारी जीवों, पक्षियों और सरीसृपों की तुलना में आठ गुना तेज़ी से विलुप्त हो रहे हैं। इस रिपोर्ट में पछिले 13 वर्षों में दुनिया के वभिन्न हसिसों में प्रकाशित 73 शोधों की समीक्षा की गई है। इसमें शोधकर्ताओं ने पाया कि सभी जगहों पर इनकी संख्या में कमी आने के कारण अगले कुछ दशकों में 40 प्रतिशत कीट विलुप्त हो जाएंगे। कीटों की संख्या हर साल ढाई प्रतिशत की दर से कम हो रही है। कीट-पतंगों का कम होना पारिस्थितिकी तंत्र के लिये घातक है, क्योंकि **पारिस्थितिकी तंत्र** और खाद्य श्रृंखला के संतुलन के लिये कीट-पतंगों का होना बहुत ज़रूरी है।

जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, बढ़ते कंकरीट के जंगल, शहरीकरण, अवैध शिकार और खेती-बाड़ी में कीटनाशक दवाओं का इस्तेमाल, समुद्र में व्याप्त प्लास्टिक प्रदूषण इन प्रजातियों के लुप्त होने के लिये ज़िम्मेदार हैं। अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) ने विलुप्त होने की कगार पर खड़े जीव-जंतुओं की जो सूची जारी की है, उसके अनुसार, 26,500 से अधिक प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा है, जिनमें 40% उभयचर, 34% शंकुधारी, 33% कोरल रीफ, 25% स्तनधारी और 14% पक्षी हैं।

आज विश्व में हर जगह प्रकृति का दोहन जारी है तथा इसके दोहन और प्रदूषण की वज़ह से विश्व स्तर पर लोगों की चिंता सामने आना शुरु हुई है। आज जलवायु परिवर्तन पृथ्वी के लिये सबसे बड़ा संकट का कारण बन गया है। यदि पृथ्वी के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लग जाएगा तो इसकी बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। इस विश्व पृथ्वी दविस पर संकल्प लेना चाहिये कि हम पृथ्वी और उसके वातावरण को बचाने का प्रयास करेंगे।

अभ्यास प्रश्न: प्रकृति के अंधाधुंध दोहन को रोकने के लिये पृथ्वी दविस आदि जैसे आयोजनों के प्रयास कतिने कारगर हैं?

